प्रस्तावना

साहित्य मनुष्य को जोड़ता है; जीवन के यथार्थ के धरातल पर जो साहित्य लिखा जाता है; वही समाज को लाभान्वित करता हैं । यथार्थ रहित साहित्य में जीवन का प्रतिफलन हो पाना कठिन प्रतीत होता है । जो साहित्य साधारण जनमानस के लिए नहीं लिखे जाते हैं, वे कहीं न कहीं अधूरे रह जाते हैं । साहित्य का क्षेत्र अत्यंत विशाल है; आज के भूमंडलीकरण युग में पाठक एक ही भाषा में लिखित साहित्य को पढ़कर संतुष्ट नहीं होते हैं । वे ज्ञान व अनुभवों के अलग अलग स्वाद को ग्रहण करना चाहते हैं । तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद के सहारे ही इस कार्य सफल को बनाया जा सकता है । विश्व-साहित्य के अध्ययन हेतु अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है और विश्व के विविध भाषाओं के अध्ययन के लिए तुलनात्मक पद्धति को अपनाना पड़ता है । तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत दो या उससे अधिक भिन्न भाषाओं का अध्ययन किया जा सकता हैं और उनके सर्वांग का विवेचन किया जाता हैं । तुलनात्मक साहित्य की प्रयोजनीयता को सभी विद्वानों ने स्वीकारा हैं । क्लाइब के अनुसार "'तुलनात्मक साहित्य' में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्व है ।"

डॉ. नगेंद्र के अनुसार "'तुलनात्मक साहित्य' एक प्रकार का अंतःसाहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है-अनेकता में एकता का संधान ।"

इंद्रनाथ चौधुरी के अनुसार "'तुलनात्मक साहित्य' विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन है ।"

साहित्य का संबंध उस समाज से हैं; जो स्त्री और पुरुष के भागीदारी से सम्पूर्ण होता है । समाज की उन्नति का भार भी दोनों के समान सहयोग पर टिका हुआ है । समाज का

प्रतिफलन साहित्य के बीजारोपन से ही शुरू हो गया था; परंतु नारी को साहित्य के केंद्र में आने के लिए काफ़ी समय प्रतीक्षा करनी पड़ी । एक लंबे अरसे के घुटन, शोषण व संघर्ष के बाद 'भोग' की सामग्री से ऊपर उठकर 'जीवन' के केंद्र में आने का सौभाग्य स्त्री को प्राप्त हुआ । किन्तु उसके दर्द से परिचय होना अब भी बाकी था...जो भोगता है; केवल वही उसकी यथार्थता को बयान कर सकता है । बिना दर्द को भोगे उसको महसूस करना; बिना चखे खाने के स्वाद पर टिप्पणी करने के समान ही प्रतीत होता है । नारी को जब आते आते इतनी स्वतंत्रता मिली कि वह अपनी बातों को अब खुलकर सबके सामने रख सकती हैं, तभी से यथासंभव इस नए इतिहास का प्रारंभ हुआ । नारी के लिए यह पुनःजीवनदान से कतई कम नहीं होगा । यहाँ भी अनेक बाधाएँ सामने आती रही । कही पुरुषसत्ता के अंह को ठेस पहुँची तो कही नारी के हुनर पर सवाल उठे !! क्योंकि तक तक समाज के संचालन और उसमें प्रभाव विस्तार करने की ज़िम्मेदारी उन लोगों ने अपने पास ले रखी थी । परंतु वे यह भूल गए कि हर मानव में अंह होता है, तो अब तक जो स्त्री के आत्मसम्मान और अहं का गला घोंटा जा रहा था....क्या इसका कोई उत्तर है समाज के पास ? हाँ ! इनमें कुछ अपवाद अवश्य ही थे, जिंहोने नारी का साथ दिया, उनका आत्मविश्वास बढ़ाया । लेकिन वह इतना काफ़ी नहीं था कि नारी को इन समस्त अपमानों से बचा पाएँ । उनमें से कुछ का प्रयास सफल रहा...और किसी किसी को निराश होना पड़ा । कहीं सुस्मिता जैसी सशक्त लेखिका को दबा दिया गया तो कही किसी की लेखनी को 'सुधार' दिया गया । 'अश्लीलता' का आरोप उठा; क्योंकि स्त्री द्वारा अपने ऊपर हुए अमानवीय अत्याचारों की वीभत्स चित्र को उघाड़ा जा रहा था । इस यथार्थ-वर्णन से जहाँ तमाम स्त्रीओं का दुःख एकाकार हो रहा था वहीं यह विवादास्पद भी हो रहा था । बहरहाल संयोगवश स्थिति कुछ ऐसी बन पड़ी कि नारी दुगनी शक्ति से लिखने लगी । जिसके पीछे उनका अदम्य साहस, आत्मविश्वास और कुछ ऐसे मनुष्य का साथ रहा; जो 'मानवीयता' में स्त्री और पुरुष में कोई भेद नहीं रखता हैं । इसी अवसर पर उन सभी साहसी वीरांगनाओं को शत शत नमन करती हूँ और उनके प्रति अपना असीम आभार व्यक्त करती हूँ ।

नारी की इतने वर्षों की पीड़ा और दर्द ही नारी-संवेदना की नीव बनी है । मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी ने भी इसी पीड़ा को अपने अनुभवों द्वारा उभारा हैं । साहित्य में उपन्यास एक ऐसी सशक्त विधा है; जो सहृदय में केवल रस ही नहीं भरता है बल्कि अपने जीवन से उन्हें जोड़ता भी हैं । इन दोनों कथाकारों ने भी इसी प्रयास को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान किया हैं । अपने उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने पाठकों को उनके दर्दों से परिचय कराया है और उनके नायिकाएँ दूसरों को लड़ने के लिए हिम्मत देती हैं । अपने उपन्यासों में चित्रित पात्रों के माध्यम से उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला है कि किसी भी नारी के लिए उसका आत्मसम्मान सबसे अधिक जरूरी हैं । अस्मिता की खोज में वही उसका सबसे पहला कदम होता है...वह किसी के 'नाम' से अपना परिचय लिखना नहीं चाहती हैं; क्योंकि उससे उसका वजूद ढकता है । इन्हीं महत्वपूर्ण दिशाओं को लेकर तुलनात्मक दृष्टि से दोनों कथाकारों के कुछ विशेष उपन्यासों का यहाँ पर विश्लेषण किया गया हैं । शोध की सीमा इसप्रकार निर्धारित की गई है- मैत्रेयी पुष्पा: *अल्मा कबूतरी, चाक, इदन्नमम और विजन*; रीता चौधुरी- *देउलांखुई, एई समय सेई समय, पपीया तरार साधु* और *मायाबृत* । इनमें से प्रत्येक उपन्यास अपने में ही एक विशेष गुण के अधिकारी हैं और जिसके चलते उसके अध्ययन में भिन्नता आई हैं । भारत की दो भिन्न भाषी महिला कथाकारों की रचनाओं में 'नारी संवेदना' कहाँ तक 'एक' हो पाई है...उसपर विशेष प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । परिवेश और परिस्थिति के चलते दोनों की कथाओं में कुछ असमानतायेँ भी परिलक्षित होती हैं और यह स्वाभाविक भी है । मूल रूप से तुलनात्मक, आलोचनात्मक और मनोविश्लेषणात्मक प्रविधि के सहारे शोध-प्रबंध में इसकी प्रस्तुति हुई है । साथ ही आवश्यकता अनुसार विवेचनात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया हैं ।

किसी शोध-कार्य को पूरा कर पाना अपने आप में एक सार्थकता है- इस शोध कार्य को करते समय यह अनुभव प्राप्त करने का सु-अवसर मिला । सबसे पहले मैं अपने गुरु एवं अपने मार्ग निर्देशक प्रो. अनंत कुमार नाथ सर के प्रति आभार प्रकट करना चाहती हूँ । जिनके सहयोग और दिशा-निर्देश के बिना यह कार्य कभी संभव नहीं होता । शोध के दौरान हुई हर छोटी

छोटी गलतियों को दिखाकर उन्हें सुधार कर सदैव वे मेरे पथ-पदर्शक रहे हैं । उनके पितृवत आशीर्वाद और मार्गदर्शन के कारण ही इस यात्रा को आज सम्पूर्ण कर पाई हूँ । इस अध्ययन को पूरा करने में परिवार के हर एक सदस्य ने मेरा सहयोग किया हैं, मेरा उत्साह बढ़ाया हैं । माँ और स्वर्गीय पिताजी का आशीर्वाद एवं उपदेश हमेशा मेरे साथ रहा हैं; खेद यह है पिताजी अपने इस स्वप्न को पूरा होते हुए नहीं देख पाये । इसी अवसर पर अपनी छोटी बहन और भय्या के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ, दोनों ने हर मुसकिल-घड़ी में मेरा हौसला बनाए रखा और मुझे आगे बढ़ने ले लिए प्रेरित किया । इसके अतिरिक्त तेज़पुर विश्वविद्यालय और कॉटन कॉलेज के सभी गुरुजनों, एवं मेरे मित्रों के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ; जिन लोगों ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव से मुझे लाभान्वित किया ।

शोध-कार्य के दौरान कई विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में जाने का सोभाग्य प्राप्त हुआ । जिनके बिना यह शोध-कार्य पूरा नहीं हो पाता । दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, पूर्वोत्तरीय क्षेत्रीय विश्वविद्यालय, गौहाती विश्वविद्यालय, तेज़पुर विश्वविद्यालय-आदि में स्थित पुस्तकालयों का दर्शन करके लाभान्वित हुई । यें सभी पुस्तकालय मानो ज्ञान का भंडार हैं...कहीं पुरातन ज्ञानों का सागर, तो कहीं आधुनिक एवं प्रायोगिक ज्ञान का भंडार छिपा था । शोध-कार्य को आगे बढ़ाने में इनसे काफी सहायता मिली । इसी संयोग में उन सब के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करती हूँ ।

"नारी संवेदना के विशाल क्षेत्र में यह शोध-कार्य एक छोटे से वृक्ष के भाँति अपना योगदान प्रदान करने में सफल सिद्ध होगा"- इसी मनोकामना के साथ इस शोध-प्रबंध को स्वर्गीय पिताजी और माँ के श्री-शरणों में अर्पित करती हूँ ।